५.मध्ययुगीन काव्य

(अ) भक्ति महिमा
आकलन

१. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

(अ) (१) अंतर स्पष्ट कीजिए –

माया रस	राम रस
मक्खन जैसा मन पत्थर जैसा होता है	पत्थर जैसा मन मक्खन जैसा होता है

(२) लिखिए –
'मैं ही मुझको मारा' से तात्पर्य

उत्तर : दादू दयाल जी के अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन 'में
अर्थात उसका अहंकार है। अपने अहंकार के कारण मनुष्य का
विवेक खत्म हो जाता है और उसे नष्ट होते देर नहीं लगती। इस
तरह मनुष्य को मारने वाला उसका अपना ही अहंकार है। कवि ने इन पंक्तियों में यह बात कही है।

(आ) सहसंबंध जोड़कर अर्थपूर्ण वाक्य बनाइए –

(१) काहै को दुख देखिए
(२) बिरला

(१) पाती प्रेम की
(२)
साईं

(1) प्रेम की पाती कोई बिरला ही पढ़ पाता है।
(2) जो पहुँचे हुए लोग हैं, वे एक ही बात कह गए हैं।

काव्य सौंदर्य

२. (अ) "जिनकी रख्या तूं करैं ते उबरे करतार", इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : संत दादू दयाल को सर्व शक्तिमान प्रभु पर अटूट विश्वास है। वे कहते हैं, जिसकी रक्षा प्रभु करते हैं, वह भवसागर पार कर लेता है। उसका कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। प्रभु की शक्ति को आरपार नहीं है। प्रह्लाद के पिता हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को होलिका की गोद में बिठाकर आग को समर्पित कर दिया था, तो उनकी रक्षा प्रभु ने ही की थी। होलिका को आग में न जलने का वरदान था, इसके बावजूद होलिका जलकर भस्म हो गई और प्रह्लाद को आँच भी नहीं आई। यह प्रभु की शक्ति का ही प्रताप था।

(आ) 'संत दादू के मतानुसार ईश्वर सबमें है', इस आशय को व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ ढूँढ़कर उनका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : संत दादू दयाल ने 'काहै कौं दुख दीजिये, साईं है सब माहिं। दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नाहिं' पंक्तियों में, ईश्वर को घट-घट में व्याप्त बताया है। वे कहते हैं कि हर व्यक्ति में ईश्वर का अंश होता है। सब की आत्मा एक ही है। उसमें ईश्वर विद्यमान होते हैं। उसमें परमात्मा के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं होता। इसलिए कोई व्यक्ति यदि किसी व्यक्ति को कष्ट देता है, उसे पीड़ित करता है, तो वह उस व्यक्ति का नहीं, बल्कि अपने स्वामी प्रभु का ही अपमान करता है। इसलिए हमें किसी भी व्यक्ति को कभी दुख नहीं देना चाहिए।

अभिव्यक्ति

३. (अ) 'अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है', इस उक्ति पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मनुष्य के अंदर सद् और असद् दो वृत्तियाँ होती हैं। सद् का अर्थ है अच्छा और असद् का अर्थ है जो अच्छा न हो यानी बुरा। अहंकार मनुष्य की बुरी वृत्ति है। अहंकारी मनुष्य को अच्छे और बुरे का विवेक नहीं होता। वह अपने घमंड में चूर रहता है और अपना भला-बुरा भी भूल जाता है। अहंकारी मनुष्य को अपनी गलती का अहसास तब होता है, जब उसकी की गई गलतियों का परिणाम उसके सामने आता है। अहंकार का परिणाम बहुत बुरा होता है। इसके कारण बड़े-बड़े ज्ञानी पुरुषों को भी मुँह की खानी पड़ती है। रावण जैसा महाज्ञानी पंडित भी अपने अहंकार । के कारण अपने कुल-परिवार सहित नष्ट हो गया। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और उसकी मंजिल है दारुण दुख। इसलिए मनुष्य को अहंकार का मार्ग त्यागकर प्रेम और सद्‌गुण का मार्ग । अपनाना चाहिए।

(आ) प्रेम और स्नेह मनुष्य जीवन का आधार है', इस संदर्भ में अपना मत लिखिए।

उत्तर : प्रेम और स्नेह से बढ़कर इस संसार मनुष्य के लिए और कोई अच्छी बात नही हो सकती। जीवन को तनाव रहित और सामान्य बनाए रखने में प्रेम और स्नेह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं। सब में ईश्वर का अंश होता है। इसलिए हमें सब के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। प्रेमपूर्ण व्यवहार से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। जन्म से न कोई किसी का मित्र होता है न कोई किसी का शत्रु। हम अपने प्रेम और स्नेह से ही किसी से नजदीकी अथवा दूरी बनाते हैं। अर्थात किसी से प्रेम करने लगते हैं या किसी से नफरत

करने लगते हैं। अनेक संतों और विद्वानों ने प्रेम की महत्ता बताई है और हमें प्रेम से रहने की शिक्षा दी है। संत कबीर कहते हैं - 'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।' इस तरह प्रेम और स्नेह सुख-चैन से शांतिपूर्ण जीवन जीने का आधार है। प्रेम बहुत नाजुक होता है। हमें इस प्रेम और स्नेह को सदा बनाए रखना चाहिए।

रसास्वादन

४.ईश्वर भक्ति तथा प्रेम के आधार पर साखी के प्रथम छह पदों का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर : कवि कहते हैं कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के मन के भीतर है, उसे पूजने के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं है। दादू दयाल माया-मोह को त्यागने और प्रभु राम की भक्ति करने का आवाहन करते हैं। उन्होंने माया-मोह में लिप्त लोगों के दिल को पत्थर के समान तथा राम की भक्ति में लीन लोगों के दिल को मक्खन के समान कोमल कहा है। वे सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति के समर्थक हैं। वे ईश्वर की भक्ति के लिए साधक को अपना अहंकार त्यागना आवश्यक मानते हैं। दादू दयाल की भक्ति ईश्वर में लीन होकर अपना अस्तित्व मिटा देने वाली भक्ति है। वे ईश्वर के गुण गाते और मस्त होकर नाचते हुए ईश्वर को अपने समक्ष प्रत्याशी खड़े हुए पाते हैं। दादू दयाल की ईश्वर भक्ति में अटूट श्रद्धा है। वे ईश्वरभक्ति को भवसागर पार करने का एकमात्र साधन मानते हैं। प्रेम के बारे में दादू दयाल का कहना है कि प्रेम को समझना बहुत मुश्किल है। कोई-कोई ही इसे समझ पाता है। वेद-पुराण आदि ग्रंथों को पढ़कर उसे नहीं समझा जा सकता। वेदों और पुराणों में ज्ञान का विपुल भंडार भरा पड़ा है, पर दादू जैसा ज्ञानी तो उसमें से एक ही अक्षर पढ़ता है। वह अक्षर है 'प्रेम'। दादू दयाल ने ईश्वर भक्ति और प्रेम की इन बातों को बहुत सीधे-सादे ढंग से अपनी सधुक्कडी भाषा में अत्यंत सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने ईश्वर भक्ति और प्रेम संबंधी अपने विचारों को साखियों अर्थात दोहा-छंद में ज्ञानोपदेश के रूप में प्रस्तुत किया है। दादू दयाल ने सीधे-सादे ढंग से अपनी सधुक्कड़ी भाषा में अपने विचारों को अत्यंत सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। अपनी बातें कहने के लिए उन्होंने साखी अर्थात दोहा छंद का प्रयोग किया है। जिसके माध्यम से उन्होंने गूढ़ बातें भी गिने-चुने शब्दों में कह दी हैं।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए:

(1) निर्गुण शाखा के संत कवि।

उत्तर : निर्गुण भक्ति शाखा दो शाखाओं में विभाजित थी। एक ज्ञानाश्रयी शाखा और दूसरी प्रेममार्गी शाखा। निर्गुण भक्ति ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर, रैदास, दादू दयाल, नानक तथा मलूकदास आदि हैं। इन कवियों ने निर्गुण निराकार ईश्वर की उपासना पर जोर दिया। उनकी भाषा सीधी-सादी बोलचाल की भाषा है।

(2) संत दादू के साहित्यिक जीवन का मुख्य लक्ष्य।

उत्तर : संत दादू दयाल निर्गुण भक्ति शाखा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि थे। दादू दयाल निर्गुण और निराकार प्रभु के उपासक थे और उन्होंने निराकार ईश्वर की उपासना पर जोर दिया। उन्होंने जाति-पाँति, धार्मिक भेदभाव, सामाजिक कुरीतियों तथा अंधविश्वास संबंधी मिथ्याचारों का विरोध किया। इनकी भाषा सीधी-सादी तथा अनेक बोलियों के मेलवाली है। इसे सधुक्कड़ी भाषा के नाम से जाना जाता है। आपके साहित्यिक जीवन का मुख्य लक्ष्य सामाजिक कुरीतियों और आडंबरो का खंडन करना और निर्गुण, निराकार ईश्वर की उपासना करना है।

6.निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके फिर से लिखिए:

(1) बाबु साहब ईश्वर के लिए मुझ पे दया कीजिए।
उत्तर: बाबू साहब ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए।

(2) से तो मछुवे पर दया करना चाहिए था।
उत्तर: उसे तो मछुवे पर दया करनी चाहिए थी।

(3) उसे तुम्हारे शक्ती पर विश्वास हो गया।
उत्तर: उसे तुम्हारी शक्ति पर विश्वास हो गया।

(4) वह निर्भीक व्यक्ती देश में सुधार करता घूमता था।
उत्तर: वह निर्भीक व्यक्ति देश का सुधार करता घूमता था।

(५) मल्लिका ने देखी तो आखे फटी रह गया।
उत्तर: मल्लिका ने देखा तो आँखें फटी रह गई।

(6) यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते मार्च पर भारा अप्रैल लग जायेगी।
उत्तर: मार्च-अप्रैल तक यहाँ पहुँचते-पहुँचते माड़ा लग जाएगा।

(7) हमारा तो सबसे प्रीती है।
उत्तर: हमारी तो सबसे प्रीति है।
(8) तुम जुठे साबित होगा।
उत्तर: तुम झूठे साबित होगे।

(9) तूम ने दीपक जेब में क्यों रख लिया?
उत्तर: तुमने दीपक जेब में क्यो रख लिए?

(10) इसकी काम आएगा।
उत्तर: इसके काम आएगा।

(आ) बाल लीला

आकलन

१. लिखिए :

(अ) यशोदा अपने पुत्र को शांत करते हुए कहती है –
हे चंद्रमा तुम आओ, तुम्हें मेरा बेटा बुला रहा है। तुम आओ, वह मधु, मेवा, पकवान और मिठाई खुद खाएगा और तुम्हें भी खिलाएगा। वह तुम्हें हाथ पर लेकर खेलेगा। तुम्हें जमीन पर बिलकुल नहीं बैठाएगा। वे बरतन में पानी भरकर हाथ से ऊपर उठाती हुई कहती हैं कि हे चंदा, तुम इसी पानी में शरीर धारण कर आ जाओ। के बर्तन का पानी जमीन पर लिखकर कृष्ण से कहती हैं, देखो, मैं वह चाँद पकड़ कर लाई हूँ।

(आ) निम्नलिखित शब्दों से संबंधित पद में समाहित एक-एक पंक्ति लिखिए -

(१) फल: खारिक, दाख, खोपरा, खीरा, । केला आम ईख रस सीरा

(२) व्यंजन: घेवर फेनी और सुधार, खोवा सहित खाउ बलिहारी।

(३) पान: तब तमोल रचि तुमहिं ख्वाबों। सूरदास पनवारों पावौं।।

काव्य सौंदर्य ।
२. (अ) निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -
"जलपुट आनि धरनि पर राख्यो।
गहि आन्यौ वह चंद दिखावै ।।"

उत्तर : उपर्युक्त पंक्तियों में सूरदास ने माता यशोदा द्वारा बालक कृष्ण को बहका कर उनके समक्ष सशरीर चंद्रमा को उपस्थित कर देने का सुंदर और स्वाभाविक वर्णन किया है। बच्चे के प्रति माँ का स्नेह बहुत प्रगाढ़ होता है। वह अपने बच्चे की हर इच्छा पूरी करने की जी-जान से कोशिश करती है। वह अपने बालक को आसमान के तारे तोड़कर ला सकती है। कवि ने 'गहि आन्यौ वह चांद दिखावै' पंक्ति से माता यशोदा की इन्ही भावनाओं का मनोहारी वर्णन किया है।

(आ) निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए
"रचि पिराक, लड्डू, दधि आनौ ।
तुमको भावत पुरी साधनों ।।"

उत्तर : माता यशोदा को बालक कृष्ण की रुचि की एक-एक चीज की जानकारी है। वे उनके कलेवे के लिए चुन-चुन कर सभी खाद्य पदार्थ ले आई हैं और उनसे कलेवा कर लेने का मनुहार कर रही हैं। वे उनके लिए अपने हाथों से बनाई गुझिया, लड्डू और दही ले आई हैं। वे कृष्ण से कहती हैं कि पूड़ी और अचार भी है, जो तुम्हें सबसे ज्यादा पसंद है। वे सभी खाद्य पदार्थों का नाम ले-लेकर उनसे कलेवा कर लेने का मनुहार करती हैं।

अभिव्यक्ति

३. 'माँ ममता का सागर होती है, इस उक्ति में निहित विचार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: माँ और ममता एक-दूसरे के पर्याय हैं। माँ के रोम रोम से ममता की झलक मिलती है। माँ का बच्चों के प्रति स्नेह अवर्णनीय होता है। वह अपने बच्चे की खुशी के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने के लिए तत्पर रहती है। वह बचपन में रात-रात भर जागकर अपने बच्चे की देखभाल और सेवा करती है। माँ के लिए कोई अपना या पराया नहीं होता। उसके हृदय में जितना स्नेह अपने बच्चे के लिए होता है, उतना ही स्नेह दूसरे के बच्चों के लिए भी होता है। उसका हृदय विशाल होता है। उसमें सबके लिए एक जैसा प्यार होता है। माँ की सहनशीलता और क्षमाशीलता का कोई जोड़ नहीं होता। माता की करुणा किसी भी बालक पर उमड़ सकती है। यदि संतान को कहीं किसी कारण से विलंब हो जाए तो माता प्रतीक्षारत रहती है। वास्तव में जननी मानवी होकर भी जगज्जननी की ही प्रतिमूर्ति होती है। माता की ममता का कोई आरपार नहीं होता। हमारे यहाँ माता के उपकारों को देखते हुए उसे देवता के समान पूजनीय माना गया है 'मातृ देवो भव।'

रसास्वादन

4. बालहठ और वात्सल्य के आधार पर सूर के पदों का रसास्वादन कीजिए।

उत्तर : संत कवि सूरदास ने 'बाल लीला' में बालक कृष्ण के बालहठ और माता यशोदा के वात्सल्य का अत्यंत सुंदर एवं स्वाभाविक चित्रण किया है। बालक कृष्ण चंदा को पाने का हठ कर रहे हैं और माता यशोदा उन्हें समझा रही हैं कि वे चंदा को पकड़ कर लाएँगी और उनके समक्ष लाकर हाजिर करेंगी वे चंदा को कृष्ण की तरह ही बालक मानकर उसे संबोधित करती हैं। इस पद में सूरदास जी ने चंदा का मानवीकरण करते हुए माता यशोदा से उसे एक बालक के रूप में संबोधित कराते हुए कहलवाया
है कि वह आ जाए, उसे उनका लाल कृष्ण बुला रहा है। कृष्ण उसे अपने साथ तरह-तरह के व्यंजन खिलाएगा। वह उसे हाथ पर लेकर खिलाएगा, जमीन पर भी नहीं उतारेगा। यशोदा बर्तन में पानी लेकर चंदा से उस पानी में शरीर धारण कर आ जाने के लिए कहती हैं। फिर पानी सहित वह बर्तन जमीन पर रखकर कृष्ण से दावे के साथ कहती हैं कि देखो, इस पानी में में चंदा को पकड़ लाई हूँ। उनके चंदा को पकड़ कर ले आने में बालक कृष्ण के प्रति उनके स्नेह के सुंदर दर्शन होते हैं।
इन पदों में कवि ने लोकगीतों की पद-शैली में अत्यंत सीधे-सादे और सरल शब्दों में बाल हठ और माता के वात्सल्य का सुंदर चित्रण किया है। प्रसाद एवं माधुर्य गुण कविता में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५.जानकारी दीजिए :

(1) सूरदास के प्रमुख ग्रंथ –

उत्तर : (1) सूरसागर (2) साहित्य लहरी।

(2) सूरदास की रचनाओं के प्रमुख विषय :

उत्तर : कृष्ण की बाल लीलाओं तथा वात्सल्य भाव का चित्रण, गोपियों का विरह वर्णन।